

शहीद होने की व्यर्थता (नेताओं द्वारा शहीदों का शोषण)

कंधे पर लदे बेताल ने विक्रमादित्य से कहा, राजन, मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो
अन्यथा तुम्हारा सर धड़ से अलग हो जायेगा, तुम्हारा अस्तित्व हमेशा के लिये खो जायेगा

आज मैंने अखबार में पढ़ा,
एक महिला, जिसका पति देवता होकर आदमी की तरह जिया
इसी अपराध पर किसी ने उसे सम्मान नहीं दिया,
गले में सदाचार का तावीज लटकता रहा, इसीलिये मास्टर बन कर दर-ब-दर भटकता रहा
हर साल करता रहा, गायत्री का जाप, हर साल बनता रहा, लड़कियों का बाप
इस साल बजरंग का पांव छुआ, तो उसकी पत्नी को पत्थर का टुकड़ा हुआ
इसका क्या कारण है?

विक्रमादित्य चौंका, बीड़ी का जोरदार कश लिया,
और उसके प्रश्न का उत्तर यूँ दिया :
सुन बेताल, उस औरत के पूर्वजन्म का हाल
वो औरत एक शहीद की माँ थी, देशभक्ति की परंपरा उसके यहाँ थी
जीवन भर सैनिकों की वर्दियां सीती रही, बेटे को शहीद देखने की तमन्ना में जीती रही
खून को देती रही पसीने का कर्ज, बढ़ता रहा देशभक्ति का मर्ज

मेघदूत युद्ध का संदेश लाया, संगीनों ने आषाढ गाया
बेटा सरहदों पर सर बो गया, इतिहास की गुमनाम वादियों में हमेशा के लिये खो गया
माँ अपने सौभाग्य पर मुस्कराती रही, बेटे की तस्वीर को फ़ौजी लिवास पहनाती रही
रोज पढ़ती रही अखबार, ढूँढती रही, बेटे के शहीद होने का समाचार
नेताओं की आदमकद तस्वीरें हंसती रहीं

इतिहास में शासक को जगह मिलती है, शहीदों को नहीं
जो इतिहास के पन्ने सीते हैं, वो इतिहास पर नहीं, सुई की नोक पर जीते हैं
भूगोल होता है जिनके रक्त से रंगीन, उनके बच्चों को मयस्सर नहीं दो गज ज़मीन
शहादत कहाँ तक अपना लहू पीती रही? केवल शहीद को जन्म देने के लिये जीती रही?

स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया उनका नाम,
जो बेचते रहे शहीदों का खून, बढ़ाते रहे चीजों के दाम
इत्र में नहाते रहे, शहीदों के खून की खुशबू छुपाते रहे

कुर्सी-पुत्रों ने बड़े कष्ट झेले,
शहीदों की लाशें सरहदों पर पड़ी रही नंगीं, और इनके बंगलों पर लगे रहे मेले
वो उधर कफ़न को तरसते रहे, इन पर गुलाबों के फूल बरसते रहे
पूरे दो मिनट तक खड़े रहे मौन, „पी.ए.“ से पूछते रहे: मर गया कौन?

„पी.ए.“ बोला, मुझसे पूछते हैं आप?
अरे इसी दिन तो मरे थे आपके बाप !
हम तो उन्हीं का मातम मना रहे हैं, लगे हाथ शहीदों को भी निपटा रहे हैं

आप भी आँसुओं का „रिज़र्व-स्टॉक“ निकालिये,
एक शहीद-स्मारक की घोषणा कर डालिये
आपकी बिल्डिंग अधूरी पड़ी है, जनता चंदा लेकर खड़ी है
कहिये, क्या इरादा है आपका?
शहीद मर के भी होता है सवा लाख का
सिर्फ कहने को समाधि में सोता है
वरना शताब्दियों तक हमारा बोझ ढोता है
आज्ञा दीजिये, किस शहीद को जगाऊँ? या, अपनी फ़ाइलों में एक नया शहीद बनाऊँ?
जिसका बलिदान हमारे लिये चंदा उगाये
और हर चुनाव में „स्टैच्यू“ बन कर खड़ा हो जाये

तो सुन बेताल, आगे का हाल
शहीद स्मारक के लिये किये गये चंदे
मगर आसमान से उतरे हुये ईश्वर के ये बंदे
चंदे की थैलियां भी ले गये, शिलान्यास का खाली पत्थर दे गये
माँ जिसे छाती से लगाकर सो गयी
खुद शहीद का स्मारक हो गयी
ममता ने उसी का बदला लिया है
सीमा पर लड़ने के लिये शहीद नहीं,
शिलान्यास का पत्थर दिया है!

रचना : अज्ञात

स्रोत : ओशो रजनीश के एक प्रवचन से साभार उद्धृत

This excellent, Hindi-language satire “SHAHEED” (*English: Martyr*) depicts in a telling manner the pathetic situation, in which innocent people are sometimes (or rather often?) lured into fighting for dogmas, ideologies and other supposedly “noble” causes. The concept of “martyrdom” is regularly misused by vested (political, communal and pseudo-religious) interests world-wide for own petty goals and ambitions. Newspapers are so full of such reports so that any person willing to see this bitter truth can observe it without much trouble. It is certainly not to deny that in certain instances there might actually be a need for patriotic duty and/or sacrifice. But any objective study will show that such a situation does not occur as regularly as the ever-present call for “SHAHADAT” (martyrdom) in the name of hundred thousand (when not millions) of causes would like to make us believe.

Note: This satire is reproduced here for purely informational purposes. In case you are aware of its author, please inform editor@india-world.de, so that due credits may be given.